eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 12, Dec 2022

व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के साहित्य में व्यंग्य चेतना

[1]अमरेन्द्र कुमार मिश्र
[1]प्रवक्ता हिन्दी, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान अतरसंड, प्रतापगढ़, उ0प्र0

Abstract

स्वतंत्रता– प्राप्ति के बाद सातवें– आठवें दशक तक आते– आते व्यंग्य स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित हो गया। व्यंग्यकारों की कड़ी मेहनत रंग लायी। कविता के समान ही व्यंग्य बहुश्रुत और बहुप्रशंसित हो गया। मंच से लेकर अनेक पत्र– पत्रिकाओं में, अखबारों में, कॉलम के रूप में व्यंग्य छपने लगा। व्यंग्यकार का उद्देश्य सामाजिक विकृतियों, विडम्बनाओं के खिलाफ नारा लगाना ही नहीं अपितु समूल उखाड़कर फेंकना हो गया। उसने अपने व्यंग्य की पैनी और तीखी धार से विकृतियों को काटना प्रारम्भ किया। व्यंग्यकार पाठक के दिल को गहराई से हिलाता है सत्य की ईमानदारी नैतिकता के बारे में मानवीय मूल्यों की पुष्टि करता है। कबीर तुलसी की तरह सूरदास ने समाज को विकृत करने के लिए व्यंग्य का इस्तेमाल किया।बैक्ट्रियन काल में आधुनिक व्यंग्य का उद्देश्य आर्थिक जीवन में व्याप्त विकृत खाली मान्यताओं सामाजिक–सांस्कृतिक राजनीतिक और धार्मि.क व्यंग्य की विडंबना को उखाड़ फेंकना था। व्यंग्य – साहित्य लोक कल्याणी और लोकमंगल से प्रेरित होकर आगे बढ़ा, क्योंकि वर्तमान युग में कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक, एकांकी, संस्मरण आदि साहित्य की विधाएँ सामाजिक, राजनैतिक, और साहित्यिक विकृतियों में उतनी स्पष्टता से व्यक्त नहीं कर पा रहे हैं। जितनी स्पष्टता से और बिना किसी लागलपेट के व्यंग्य इसका प्रकटीकरण करता है.... यही कारण है कि व्यंग्य– साहित्य को और साहित्यिकों के साथ– ही– साथ जनमानस में अधिक ग्राह्य और लोकप्रिय हो रहा है। इसकी परिव्याप्ति अपढ़ से लेकर विद्वान तक, कहानीकार से लेकर समीक्षक तक मंच पर होने वाले काव्य– पाठकों से लेकर रेडियों, गोष्ठियों और वार्त्तालापों तक अखबारों, दफ्तरों और सामान्य वार्त्तालापों में भी इस व्यंग्य की उपस्थिति देखी जा सकती है।

विडंबना विकृति से आती है। व्यंग्यकार ने अपने लेखों में समाज की विकृतियों को दर्शाया है। लेखक जब समाज में अन्याय असंगत और अनीतिपूर्ण कार्यों को देखता है और यह पाता है कि इसके खिलाफ अन्य कोई भी सामाजिक आक्रोश नहीं व्यक्त कर रहा है तो उसकी संवेदनशीलता जाग्रत हो जाती है और वह अपने व्यंग्यास्त्र के माध्यम से सोयी हुए चेतना को जाग्रत करने का काम करता है। उनका गुस्सा विभिन्न साहित्यिक विधवाओं में देखा जाता है। इस प्रकार व्यंग्य द्वारा प्रस्तुत साहित्य समाज सुधार और विकृति उन्मूलन का साहित्य है। व्यंग्यकार वह है जो बुराई को हटाकर अपने व्यंग्य से उतारता है। व्यंग्य के माध्यम से बुराई और बोझ को दूर

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 12, Dec 2022

करने का काम करता है।व्यंग्य, मानवीय करुणा को जगाकर मनुष्य को अधिक उदात्त बनाने में पूर्ण सक्षम हैय उसमें जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टि, अपने से अलग हटकर सोचने की वृत्ति, समकालीन मनुष्य एवं उसके परिवेश को जानने की अद्भुत ललक होती है। वही व्यंग्य श्रेष्ठ है जो व्यापक सन्दर्भो के लिए होता हैय जिसमें मानव के प्रति निष्ठा होती है, जो पैना एवं करुण होता है। ऐसी दशा में व्यंग्य का भविष्य उज्ज्वल है। यही व्यंग्य सामान्य व्यक्ति की आशाओं – आकांक्षाओं का प्रतीक है।

बीज शब्द– विकृति उन्मूलन, सामाजिक आक्रोश, मानवीय करुणा, आर्थिक असमानता, जीवन यथार्थ, लोक कल्याण और लोकमंगल।

Introduction

स्वतंत्रता – प्राप्ति के बाद सामाजिक और आर्थिक रूप से प्रतिष्ठित होने की जिजीविषा ने सामाजिक जीवन में एक अज्ञात होड़ को जन्म दिया, किन्तु हाड़तोड़ आर्थिक संधर्षों के बावजूद बराबरी की प्रतिष्ठित होने की इच्छा को आर्थिक असमानताओं ने व्यक्ति के आनंद और उल्लास को निराशा और अवसाद में परिवर्तित कर दिया। अभाव बना रहे तो भाव बने रहते हैं। आये दिन नौकरी पेशा लेागों की तनख्वाह और भत्ते बढ़ने पर भी नित्यप्रति हड़ताल, घेराव आदि होते रहने के कारण देश की उत्पादन – गति को आघात पहुँचाता है और आर्थिक हानि होती है। बढ़ती हुई चोरबाजारी समानांतर व्यवस्था बन गई है। देश की अर्थ व्यवस्था के लिए यह बड़ा संकट है। स्वस्थ सामाजिक सम्बंध आर्थिक संघर्ष के कारण विकृत हो रहे हैं। कोहली ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में इन आर्थिक स्थितियों के प्रति आक्रोश, असंतोष और न्याय के प्रति आग्रह को प्रकट किया है। आर्थिक विषमता, पूँजीपतियों, मिल – मालिकों, जमींदारों, सूदखोरों, मुनाफाखोरों, कालाबाजारियों और ऐशोआराम पर धन को पानी की तरह बहाने वालों लोगो पर कोहली ने अपनी व्यंग्य – लेखनी चलायी है। – ''व्यंग्य की बनावट गद्य के निकट की है। पद्य में रूमानीपन का आवेग होता है। व्यंग्यकार रूमानी स्वभाव का नहीं होता वह यथार्थवादी होता है। उसकी दृष्टि सौन्दर्य की दृष्टि नहीं होती वह तो जीवन के दोषों और असंगतियों पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करता है। व्यंग्य शोषितों पीड़कों की वाणी है। व्यंग्य, सत्य के हाथ का पवित्र अस्त है। इस अस्त्र के द्वारा वह 'कार्हक' से बनकर आदर्श मनुष्य की प्रतिष्ठा करता है।''1

व्यंग्य – चेतनाः– व्यंग्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से विकृतियों और बुराइयों के खिलाफ जनमानस को तैयार करना उसे ताकत देना है। उन विकृतियों के खिलाफ निर्णय की जिसने सामाजिक समरसता और भाईचारे के ताने – बाने को तोड़ दिया है। कमजोर किया है। वह अपने व्यंग्य से समाज की सुप्त शक्ति को जगाते और सचेत करते हैं। व्यंग्य की भव्यता और चुनौती ने इसे निरंतर मजबूती प्रदान की है। सच्चे और सार्थक व्यंग्य की ताकत यह है कि यह न केवल मूल्यों के प्रवाह को

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 12, Dec 2022

दर्शाता है बल्कि मानवीय मूल्यों की रक्षा और प्रचार भी करता है। व्यंग्य ने सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अच्छे मूल्यों का निर्माण किया है। मानव – प्रकृति, जिसमें सुमति और कुमति है। व्यंग्य, सुमति के हाथ का अंकुश है, जो कुमति से उदण्ड विकारों से उत्पन्न अमंगल को मिटाकर सुमति से प्रस्तुत सुमंगल का मार्ग प्रशस्त करता है। व्यंग्य, अमंगलकारी पहले है और मंगल भाव बाद में व्यंग्य, सुधार थोपने के पक्ष में नही है। व्यंग्य का उद्‌गम – स्रोत भी हृदय होता है जहाँ ईर्ष्या अथवा विरोध का अंकुर जन्म लेता है। मन के प्रतिकूल जब कोई भी स्थिति आती है तो विरोधाभास जाग्रत होता है.... ऐसी मनोदशा में आंतरिक विरोध का प्रकटीकरण व्यंग्य के रूप में होता है। कोई भी लेखक अपनी कुशलता और प्रतिभा से व्यंग्य का सर्जन करता है, हालांकि लेखक का काम जानबूझकर दर्द शोषण विकृति और अनाचार की बुनियादी स्थितियों पर आधारित है। हालांकि इस तरह के व्यंग्य में सत्य या अनुभवजन्य शक्ति की कोई खोज नहीं है। एक ही समय में तीव्र विडंबना समूह के दिलों को खोलती और फैलती है। इसलिए आलोचकों को संवेदनशील होना चाहिए भावनात्मक नहीं। इसका मुख्य लक्ष्य कद्दू से आंखों को उत्तेजित करना और खोलना है। व्यंग्य की विराटता और पौरूष ने निरन्तर जनमानस को आश्वस्त किया है। डॉ0 धनंजय वर्मा ने लिखा है कि –''सच्चे और सार्थक व्यंग्य की यह ताकत होती है कि वह मूल्यों की आपाधापी और संक्रान्ति का चित्र ही नहीं देता नये मूल्यों की तलाश और उनकी ओर इशारा भी करता है।''2

व्यंग्यकार समाज की विकृतियों और बुराइयों से वैयक्तिक रूप से सीधे लड़ने में समर्थ नही होता, लेकिन वह बुराइयों, विसंगतियों, विषमताओं से लड़ने के लिए सामाजिक शक्ति उत्पन्न करता हैय वह देशवासियों के अन्तरतम को अपने व्यंग्यबाणों से झकझोरता है, उनकी सुषुप्त चेतना को जाग्रत करता है। समाज में अपने लेखन के माध्यम से जीवन की विसंगतियों, विषमताओं के खिलाफ उत्पन्न चेतना से ही परिवर्तन आ सकता हैं। भ्रष्टाचार से तभी दो – दो हाथ किया जा सकता है, जब समाज में विरोध की चेतना की ललहर हिलोरे मार रही हों। इस चेतना को जागरित करने के लिए अनाचार भ्रष्टाचार आदि विद्रूपताओं और विकृतियों पर प्रहार करता है। देश में भ्रष्टाचार नामक यह रक्त – बीज अपनी जीभ पसारे सबको निगल रहा है। राजनेता, सरकारी, अधिकारी, उद्योगपति आदि भ्रष्टाचार फैलाने वाले जन्तु हैं। ये जन्तु समाज रूपी लकड़ी को दीमक की तरह अंदर ही अंदर खोखला कर रहे हैं। क्योंकि इनके शब्दकोश में 'शर्म' नामक शब्द है ही नहीं। देश के अन्दर फैले इस भ्रष्टाचार के विशाल विश्वरूप का दर्शन कराते हुए शरद जोशी ने व्यंग्य किया है। – ''सारे सागर को मसि करें और सारी जमीन का कागज करें फिर भी भ्रष्टाचार का भारतीय महाकाव्य अलिखित ही रहेगा। कैसी बैठी है काली लक्ष्मी प्रशासन के फाइलों

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 12, Dec 2022

वाले कमल पत्र पर उद्योगों के हाथी डुला रहे हैं चँवर। चरणों में झुके हैं दुकानदार, ठेकेदार, सरकार को माल सप्लाई करने वाले नम्र, मधुर सज्जन लोग।''3

विडंबना की चेतना मानव मन से जुड़ी हुई है। जब हम अपने मन में व्यवस्था से नाराज़ होते हैं तो उसकी आलोचना करने या उसकी जाँच करने की प्रवृत्ति विडंबना के साथ पैदा होती है। उच्च और उदार प्रवृत्ति का व्यक्ति लोककल्याण और समाज – सुधार के लिए व्यंग्य को चुनता है। डॉ0 चन्द्रशेखर का 'बयान एक गधे का', हरिशंकर परसाई का 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' 'जैसे उनके दिन फिरे' आदि इसके उदाहरण हैं।

रवीन्द्र नाथ त्यागी का एक उदाहरण द्रष्टव्य है – ''एक स्थानीय नेता, जो भाषण कर रहे थे बड़े प्रेमी पुरुष थे। इस लड़की को देखा तो इससे भी प्रेम हो गया। ये उनकी सातवीं धर्म – पत्नी थी। बाकी छह पत्नियाँ अलग – अलग हवेलियों में रहती थी और उसमें से प्रत्येक अलग – अलग हवेलियों में रहती थी और उसमें से प्रत्येक अलग – अलग राजनीतिक दलों से सम्बंधित थी। स्थिति यह थी कि जैसे ही कोई नया राजनैतिक दल उस क्षेत्र में जन्म लेता था वैसे ही नेताजी एक विवाह और रचा लेते थे। इस तरह वे सच्चे जनसेवक थे पद से उन्हे कोई मोह नहीं था। चुनाव में वे हमेशा खड़े होते थे और वह भी सरकारी उम्मीदवार के खिलाफय परन्तु उनकी आत्मत्याग की भावना इतनी स्वस्थ थी कि चुनाव के एक – दो दिन पहले वे हमेशा अपना नाम वापस ले लेते थे। वैसा करने के लिए उन्हे या तो शराब का ठेका दिया जाता था या जंगल काटने की इजाजत। इसके बाद वे फिर उसी उत्साह से जनसेवा में जुट जाते थे।''4 व्यंग्य, कल्पना की उपज नही होता वह जीवन यथार्थ से जुड़ा होता है। जीवन की विकृतियाँ जब साहित्यकार बिना किसी भय के प्रकट करता है तो समाज में व्याप्त सड़ान्ध को उजागर करने के लिए परिवर्तनकारी चेतना का निर्माण करता है, इसीलिए व्यंग्य, ध्वंस या विनाश करके सत्य का, सुन्दर का और शिवम, का निर्माण करता है। व्यंग्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से कवि या निबंधकार की अपेक्षा जीवन और समाज की मूल चेतना के अधिक निकट होता है, उनका दृष्टिकोण सामाजिक वास्तविकता पर आधारित है इसलिए वह अपने कार्यों में सामाजिक वास्तविकता को अधिक गंभीरता से लेते हैं। व्यंग्य उस गुण की जानकारी मात्र न देकर उस युग की जाँच – पड़ताल करता है और उस युग की सच्ची छवि सामने प्रस्तुत करता है। नारफल फरलांग कहते हैं – ''जो ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुए हैं, उनके कारण प्रत्येक युग की व्यंग्य रचनाएँ महत्त्वपूर्ण माध्यम हैं अपने युग को जानने का।''5

अतः इन उद्देश्यों के साथ ही प्रसिद्ध व्यंग्य – समीक्षकों ने भी कई उद्देश्यों को दर्शाया है, जिनका स्वरूप व्यक्तिगत रूप से भिन्न है। मनुष्य ही साहित्य का निकष है। साहित्य का वैयक्तिक पक्ष और सामाजिक पक्ष दोनों का उद्देश्य सामाजिक, राजनीतिक,

eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 12, Dec 2022

आर्थिक – धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना का उद्घाटन करना ही कवि और लेखक का उद्देश्य होता है।

जब लेखक समाज और व्यक्ति में उत्पन्न विकारों, विडम्बनाओं और विकृतियों पर प्रहार करता है तो उसकी दृष्टि समाज – निरपेक्ष होती है। इस तानाशाही को सबसे सफलतापूर्वक विडंबनापूर्ण ढंग से व्यक्त किया गया था। क्योंकि यहां वह व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभव का उपयोग करता है। विडंबना साहसपूर्वक अपनी बात व्यक्त करती है भले ही कवियों या लेखकों को वह मिल जाए जो वे कविता या गद्य में शामिल करने में विफल रहे हैं। व्यंग्य का चाहे वह वैयक्तिक पक्ष हो या सामाजिक। व्यक्तिगत जीवन की या सामाजिक जीवन में पल रही विषमताएँ इन परिस्थितियों से बचकर चल नहीं सकता। यही कारण है कि स्वाधीनता पूर्व और स्वाधीनता के बाद की सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा धार्मिक परिस्थितियों ने व्यंग्य – चेतना को जाग्रत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। व्यंग्यकार समाज सचेतक के रूप में इन परिस्थितियों के साथ ही साथ अन्तर्विरोधों और विसंगतियों को मानव के व्यवहार और स्वभाव के अपने व्यंग्य का विषय बनाता है। व्यक्ति अच्छाई एवं बुराई का समन्वित रूपाकार होता है। किसी में उदात्त गुणों की अधिकता होती है तो किसी में अनुदात्त गुणों की। समाज में विकृतियों और सुकृतियों का निर्माण भी इसी क्रम में होता है। विकृतियों की प्रबलता और अधिकता समाज तथा सामाजिकता को कमजोर करती है, जब तक समाज में रोग के रूप में छिपी हुई इन विकृतियों और बुराइयों पर प्रहार नही होता तब तक समान मानवीय मूल्यों और उदात्त गुणों से मुक्त नहीं हो सकता। बुराइयों का उद्घाटन करते हुए उन्हें दूर करने का प्रयास करना उदार वृत्ति वालों, प्रज्ञावानों का ही कार्य होता है। सुधार का यह कार्य लेखक अपनी पैनी दृष्टि और निष्पक्ष लेखनी से ही करता है, क्योंकि सीधी लड़ाई और प्रहार समाज को विखण्डित करता है, लेकिन साहित्यिक प्रहार या लेखनी की धार की चोट तिलमिलाहट उत्पन्न करते हुए विचार करने के लिए विवश करती है, यह विवशता सुधार की प्रक्रिया को जन्म देती है।

संदर्भ संकेत-

1–माहेश्वरी सुरेश, स्वतंत्रोत्तर हिंदी–व्यंग्य का मूल्यांकन, विकास प्रकाशन, कानपुर, 1994, पृष्ठ, 334
2–भैरव प्रसाद गुप्त, नई कहानियां, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, मार्च–1959, पृष्ठ, 117
3–जोशी शरद, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ, 03
4–गोयनका कमल किशोर, रवीन्द्र नाथ त्यागीः प्रतिनिधि रचनाएं, परग प्रकाशन, दिल्ली, 1987, पृष्ठ, 70
5-सं0 नारफन फरलांग – इंग्लिश सटायर, पृ0 – 21